P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-7* March- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गाँधीजी का आदर्श राज्य : रामराज्य

Gandhiji's Ideal State: Ramrajya

Paper Submission: 03/03/2021, Date of Acceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

उज्जवल कुमार भास्कर
शोध छात्र,
राजनीति विज्ञान विभाग,
तिलकामाँझी भागलपुर
विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश

गाँधीजी के आदर्श राज्य में न्याय व्यवस्था का स्वरूप ऐसा नहीं होगा जैसा कि आज है। आधुनिक न्याय प्रणाली महंगी और पेचीदा है। गाँधीजी के अनुसार न्याय ग्राम पंचायतों द्वारा होगा अथवा मध्यस्थों द्वारा।

आदर्श राज्य में डॉक्टरों की लम्बी–चौड़ी फौज की आवश्यकता नहीं होगी। कार्य करने की परिस्थितियां स्वस्थ्य होगीं। बड़े–बड़े नगर और मशीनें नहीं होगी। रोग और गन्दगी का अभाव होगा। फिर भी यदि कुछ डॉक्टर हुए तो वे समाज–सेवी होंगे, धन लोलुप नहीं।

The nature of the judicial system in Gandhiji's ideal state will not be the same as it is today. The modern justice system is expensive and complicated. According to Gandhiji, justice will be done by the Gram Panchayats or by the arbitrators.

In the ideal state, a long and wide army of doctors will not be required. Working conditions will be healthy. There will be no big citiesa and machines. There will be absence of disease and filth. Still, if there are some doctors, then they will be social servants, not money-gimmicks.

मुख्य शब्द : हिन्दुस्तान, पाण्डित्य, नवजीवन, बहादुर, भौतिकवाद, जनहितकारी।
Hindustan, Pandyatya, Navajivan, Brave, Materialism, Public Interests.

प्रस्तावना

गाँधीजी ने अपने आदर्श राज्य को रामराज्य के नाम से पुकारा है। भारतीय जन मानस में आदर्श राज्य की कल्पना 'रामराज्य' के रूप में ही है। राम द्वारा प्रशासित राज्य, एक आदर्श राज्य का मापदण्ड है। ऐसे राज्य में राजा मर्यादा में रहकर राज्य सता का प्रयोग लोक कल्याण हेतु करता है। राजा दरअसल राजा न होकर जनता का सेवक होता है। उनका राज्य एक न्याय तथा शील आधारित होता है। अतः वह वैयक्तिक और सामाजिक नैतिकता का मूल मंत्र होता है। गाँधीजी जब अपने आदर्श राज्य को राम राज्य कहते है तो उनका तात्पर्य एक ऐसे ही नैतिक और आत्मिक राज्य से होता है। उनके द्वारा की जाने वाली भौतिक उन्नति का उद्देश्य नैतिक उन्नति होता हैं। राजा रामचन्द्र जी का राज्य, क्योंकि ऐसे ही राज्य के आदर्श स्वरूप की बात आती है, तब इस हेतु 'रामराज्य' का स्मरण किया जाता है, गाँधी जी इसी रूप में 'रामराज्य' को अपना आदर्श घोषित करते है।[1]

भारत में 'रामराज्य' शब्द के अर्थ को लेकर कई भ्रांतियाँ रही हैं, कई विद्वान इस शब्द के प्रयोग से बचते रहे हैं, लेकिन अब जबकि इस शब्द के अर्थ का नए सिरे से राजनीतिक दुरूपयोग हो रहा है और इसके एक संकीर्ण अर्थ के राजनीतिक रूप से स्थापित करने की अज्ञानतापूर्ण कोशिश हो रही है, तो ऐसी स्थिति में हमें गाँधी के सपनों का वास्तविक 'रामराज्य' फिर से समझने की जरूरत है, ऐसा नहीं है कि स्वयं गाँधीजी के समय में इस शब्द के प्रति भ्रांतियां नहीं थी, कई मौको पर खुद उन्हें इस पर स्पष्टीकरण देना पड़ा था, इसलिए विभिन्न अवसरों पर उनके रामराज्य संबंधी वक्तव्यों का पुनर्पाठ इस मायने में बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है।[2]

साहित्यावलोकन

अनुसंधान से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करना किसी भी शोधकर्ता के लिए एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण है। मानव अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। यद्यपि समस्त साहित्य को प्रस्तुत करना समय एवं परिस्थितियों के अभाव में संभव नहीं

है फिर भी समय पर प्रकाशित पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य, ग्रन्थ, पुस्तकें, निबंध, लेख, जो वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित हैं, जिसके अध्ययन से प्राप्त महत्वपूर्ण विवरण को निम्न रूप में प्रस्तुत किया गया है–

हरदान हर्ष द्वारा लिखित पुस्तक "गांधी : विचार और दृष्टि" (1996) गांधी के वैचारिक विवेक को बहुत ही सच्चे स्वरूप में रखती है और एक ऐसी जीवन दृष्टि प्रदान करती है जिससे मौलिक भारतीयता का रूप सम्पुष्ट होता है।

डॉ. डी.एस. यादव द्वारा लिखित रचना "गांधी दर्शन : विविध आयाम" (2012) गांधी दर्शन के व्यापक आयामों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करती है।

महेश कुमार द्वारा लिखित पुस्तक "राष्ट्रपिता महात्मा गांधी" (2019) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी देश की आजादी तथा दुखी मानवता के उद्धार के लिए गांधीजी जीवन भर संघर्ष करते रहे। एक युगपुरुष और महान् व्यक्ति के अंतहीन कार्यों के बारे में जानकारी देती हैं जो एक प्रेरणादायी पुस्तक हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

गाँधीजी ने कहा था – स्वराज्य के कितने ही अर्थ क्यों न किए जाए तो भी मेरे नजदीक तो उसका त्रिकाल सत्य एक ही अर्थ है और वह है 'रामराज्य' यदि किसी को राम राज्य शब्द बुरा लगे तो में उसे धर्म राज्य कहूँगा, रामराज्य शब्द का भावार्थ यह है कि उसमें गरीबों की संपूर्ण रक्षा होगी। सब कार्य धर्मपूर्वक किए जायेंगें और लोकमत का हमेशा आदर किया जायेगा ..... सच्चा चिंतन तो वही है जिसमें रामराज्य के लिए योग्य साधन का ही उपयोग किया गया है, यह याद रहे कि रामराज्य स्थापित करने के लिए हमें पाण्डित्य की कोई आवश्यकता नहीं है जिस गुण की आवश्यकता है, वह तो सभी वर्गो के लोगों, स्त्री, पुरूष बालक और बूढ़े तथा सभी धर्मो के लोगों में आज भी मौजुद है। दुःख मात्र इतना ही है कि सब कोई अभी उस हस्ती को पहचानते ही नहीं है सत्य अहिंसा, मर्यादा–पालन वीरता, क्षमा धैर्य आदि ।

असहयोग अंदोलन के दौरान 1921 को गुजराती नवजीवन में महात्मा गाँधी लिख चुके थे– कुछ मित्र राज्य का आदर्श करते हुए पूछते हैं कि जब तक राम और दशरथ फिर से जन्म नहीं लेते तब तक क्या रामराज्य मिल सकता है? हम तो राम राज्य का अर्थ स्वराज्य, धर्म राज्य, लोक राज्य से करते हैं, वैसे राज्य तो तभी संभव है जब जनता धर्म निष्ठ और वीर्यवान बने, अभी तो कोई सद्गुणी राजा भी प्रजा उसकी गुलाम बनी रहेगी, हम राज्यतंत्र और राजनीति को बदलने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, रामराज्य के निर्माण में महिलाओं की भागीदारी अनिवार्य बताते हुए जनवरी, 1925 को महिलाओं को एक विशेष सभा में महात्मा गाँधी ने कहा था.....मैं सदा से कहता आया हूँ कि जब तक सार्वजनिक जीवन में भारत की स्त्रियाँ भाग नहीं लेती, तब तक हिन्दुस्तान का उद्धार नहीं हो सकता, लेकिन सार्वजनिक जीवन में वही भाग ले सकेगी जो तन और मन से पवित्र दिशा में चलते जा रहे हो, जब तक कि ऐसी स्त्रियाँ हिन्दुस्तान के सार्वजनिक जीवन को पवित्र न कर दे, तब तक रामराज्य अथवा स्वराज्य असंभव है, यदि ऐसा स्वराज्य संभव भी हो गया, तो वह ऐसा स्वराज्य होगा जिसमें स्त्रियाँ को पूरा–पूरा भाग नहीं होगा, और वह मेरे लिए निकम्मा स्वराज्य होगा।[3]

आज रामराज्य को एक खास धार्मिक सम्प्रदाय से जोड़ा जा रहा है, गाँधी के समय भी ऐसा प्रयास हुआ था, इसका जवाब देते हुए, फरवरी, 1947 को एक प्रार्थना सभा में महात्मा गाँधी ने कहा था– जिस आदमी की कुर्बानी की भावना अपने सम्प्रदाय को भी स्वार्थी बनाती है मैने अपने आदर्श समाज को रामराज्य का नाम दिया है, कोई यह समझने की भूल न करें कि रामराज्य का अर्थ है हिन्दुओं का शासन, मेरा राम खुदा या गॉड का ही दूसरा नाम है, मैं खुदाई राज चाहता हूँ जिसका अर्थ है धरती पर परमात्मा का राज्य ..... ऐसे राज्य की स्थापना से न केवल भारत की संपूर्ण जनता का, बल्कि समग्र संसार का कल्याण होगा।[4]

गाँधी ने कांग्रेस को जन कांग्रेस बनाया, कांग्रेस को राष्ट्रवादी आंदोलन का रूप दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति में उनकी भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। अपने समय में उन्होनें असहयोग आंदोलन (1920–22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34), व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940), भारत छोड़ो आंदोलन (1942), का आवाहन किया था। उन्होनें लोगों में डर के तत्व को समाप्त कर उन्हें बहादुर बना दिया था। सत्य व अहिंसा द्वारा भारत को स्वतंत्रता के द्वार पर ला खड़ा किया।

गाँधीजी की रचनाओं में मुख्य इस प्रकार थी– 'द स्टोरी आफ माई एक्सपैरी मैंटस विद् ट्रूथ', 'हिन्द स्वराज' आदि। इसके अतिरिक्त 'हरिजन' पत्रिका में वे अपने विचारों को व्यक्त करते रहते थे। 'हिस्ट्री ऑफ सत्याग्रह' उनकी एक और पुस्तक है। उनके नाम से लगभग 125 ग्रन्थ खण्डो के रूप में प्रकाशित हुए है।

गाँधी विचार धारा गाँधीवाद के नाम प्रसिद्ध है। वे स्वय कहा करते थे के गाँधी वादी नामक कोई विचार धारा नहीं है। परंतु वे स्वयं भी यह कहा करते थे कि "गाँधी मर सकता है, गाँधीवाद नहीं मर सकता है'' उनकी समस्त विचार धारा पश्चिमी समाज में प्रचलित व्यवस्था के विरोध में व्यक्त की जा सकती है। उन्होनें औद्योगीकरण, भौतिकवाद व पूँजीवाद की निंदा करके आध्यात्मवाद का विचार दिया। पश्चिमी केन्द्रीकृत लोकतंत्र व संसदीय व्यवस्था के स्थान पर रामराज्य की संकल्पना बतायी। समाज का व्यक्ति को एक दूसरे का विलोम न मानकर एक दूसरे का सहभागी बताया। मार्क्सवाद व पूँजीवाद की अपेक्षा न्यायकिता व स्वदेशी के विचार दिए। वे अपने अधिकार में एक महान अर्थशास्त्री थे, एक समाजवादी थे। परंतु मार्क्सवादी नहीं थे।[5]

गाँधी धर्म, राजनीति के संबंधों पर जोर दिया करते थे। धर्म, ईश्वर व सत्य, तीनों का एक ही अर्थ होता है, राजनीति लोगों की सेवा का साधन होती है। स्वराज्य व्यक्ति की स्वायत्तता व राज्य की आत्म निर्भरता का दूसरा नाम है। अपने भाग्य बनाने का साधन। गाँधी लोकतंत्र व स्वतंत्रता का समर्थन करते थे। उनका रामराज्य का विचार सर्वोदय, लोकतंत्र, समानता व स्वतंत्रता का प्रतीक है। गाँधी साहस, साधनों व स्वच्छता

पर जोर देते थे। साधन को साध्य बनाते है। गाँधी के आर्थिक विचार सर्वोदय, स्वदेशी व न्यायप्रियता से जुड़े थे। अंहिसा, गाँधी के दर्शन का मूल मंत्र था।[6]

प्रशासन के स्तर पर भी गाँधी जी ने विस्तृत विकेन्द्रीकरण का समर्थन किया। उन्होनें यह विचार रखा कि उनका आदर्श राज्य छोटे–छोटे आत्मनिर्भर ग्राम समुदायों का संघ होगा प्रत्येक ग्राम समुदाय का प्रशासन पांच व्यक्तियों की पंचायत, चलाएगी जिन्हें प्रतिवर्ष निर्वाचित किया जायेगा। ग्राम पंचायतों को विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शक्तियों प्राप्त होगी, परंतु समाज में केवल मेल–जोल और व्यवस्था बनाये रखने के लिए मुख्यतः नैतिक सता और जनमत के प्रभाव का सहारा लिया जायेगा। गाँधीजी को दृढ़ विश्वास था कि ग्राम समुदाय धीरे–धीरे लोगों में हार्दिक संबंध स्थापित कर देगें। उसमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को बढावा देगें और शालीनता की भूमिका निभाएगें।[7]

ग्रामों के समूह को ताल्लूकों के रूप में, ताल्लूकों के समूहों को जनपदों के रूप में और जनपदों के समूह को जनपदों के रूप में संगठित किया जायेगा। इनमें से प्रत्येक इकाई अपने से, इकाई के लिए अपने–अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजेगी। शासन के प्रत्येक स्तर को पर्याप्त स्वायत्तता प्राप्त होगी, और वह सामुदायिकता की भावना से ओत–प्रोत होगा, प्रत्येक प्रदेश अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और संपूर्ण देश के हित को ध्यान में रखते हुए अपना–अपना संविधान बनाने की स्वतंत्र होगा। केन्द्र इस स्तर पर पूरे समुदायों का समुदाय प्रतीत होगा। केन्द्रीय सरकार को इतनी सत्ता अवश्य प्राप्त होगी कि वह सब प्रदेशों को एकता के सूत्र में पिरो सके, परंतु इतनी नहीं कि वह उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर दे। गाँधीजी केन्द्रित विद्यान सभा के प्रत्यक्ष चुनाव के विरूद्ध थे क्योंकि उससे उत्तरदायित्व की भावना का ह्यास होगा और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलेगा। गाँधीजी को विश्वास था कि इस तरह कि राज्य व्यवस्था को विस्तृत अधिकारियों की जरूरत नहीं होगी क्योकिं उसमें अधिकांश निर्णय प्रक्रिया विकेन्द्रीकृत होगी फिर जिस समाज में कोई भूखा नहीं रहेगा और सब लोग मिल–जुलकर रहेंगें उसमें अपराध बहुत कम होगें अतः पुलिस की विशेष जरूरत नहीं रहेगी। यदि भूले–भटके कोई अपराध कर बैठेगा तो जनमत का नैतिक प्रभाव उसका हृदय परिवर्तन करने के लिए पर्याप्त होगा। यदि जरूरत हो तो नागरिक बारी–बारी से पुलिस की भूमिका संभाल सकते है। इस राज व्यवस्था में गृह युद्ध की कोई संभावना नहीं है, और सेना की जरूरत भी नहीं रहेगी जहाँ लोग अपनी स्वाधीनता के लिए मर–मिटने को तैयार रहेगें वहॉ विदेशी आक्रमण को कोई खतरा नहीं रहेगा।[8]

इसमें संदेह भी नहीं कि गाँधीजी ने विकास का जो मार्ग दिखाया वह भारत की संस्कृति और मूल्य परम्परा के अनुरूप था। परंतु इस देश को प्रोद्योगिकी प्रधान और तनाव भरे विश्व में अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त करने के लिए इससे भिन्न रास्ता चुनना पड़ा। कुछ भी हो गाँधी जी ने मनुष्य को उपभोग का जो संदेश दिया। वह आज के युग में मानवता के भविष्य की रक्षा के लिए पर्यावरण का महत्वपूर्ण सिद्धांत बन चुका है।

गाँधीजी रामराज्य को अपना आदर्श राज्य इसलिए भी घोषित करते हैं क्योंकि यह एक व्यावहारिक आदर्श है, जबकि उनका पूर्ण आदर्श तो एक राज्य विहीन, पूर्ण स्वतंत्र लोगों के ऐच्छिक सहयोग पर आधारित एवं कार्यरत समाज ही है जिसमें वाह्यकारी राज्यरूपी किसी संगठन का कोई अस्तित्व नहीं है इसलिए प्लेटो की तरह गाँधीजी भी अपने आदर्श के दो रूप प्रस्तुत करते हैं– एक सैद्धान्तिक रूप पूर्ण आदर्श अर्थात राज्यविहीन समाज और दूसरा व्यवहारिक या रामराज्य के रूप में एक उपादर्श राज्य।[9]

अतः व्यवहारिक होने के नाते उनका उपादर्श ही उनका राज्य है जिसका सविस्तार वर्णन उन्होनें अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्द स्वराज्य' में किया है। उपादर्श राज्य की व्यवस्था निम्न प्रकार से होगी–

अंहिसात्मक राज्य

गाँधीजी का आदर्श राज्य अंहिसात्मक चरित्र का होगा। इसमें राज्य का अस्तित्व तो होगा लेकिन उसका आधार आधुनिक राज्य की तरह हिंसा नहीं, अहिंसा होगा। इसमें सेना, पुलिस, न्यायालय और जेल आदि का अस्तित्व होगा लेकिन इसमें सत्ता का प्रयोग जनता को आतंकित और उत्पीड़ित करने के लिए नहीं वरन् लोक कल्याणकारी उद्देश्य की सिद्ध करने हेतु जनसेवा के रूप में किया जायेगा। यह एक जन हितकारी तथा जनसेवक राज्य होगा। समाज विरोधी तत्वों के विरूद्ध इसमें सत्ता का प्रयोग तो किया जायेगा लेकिन उसका स्वरूप अंहिसात्मक होगा।[10]

गाँधीवाद का आर्थिक पक्ष ट्रस्टी शिप का सिद्धांत

1. ट्रस्टी शिप सिंद्धांत के अनुसार सम्पत्तिशाली व्यक्ति अपनी सम्पति का मौलिक नहीं, बल्कि ट्रस्टी है।
2. गाँधीजी अरस्तू के इस सिंद्धांत के समर्थक थे संपत्ति व्यक्तिगत होनी चाहिए तथा उपयोग सार्वजनिक होना चाहिए।
3. गाँधीजी ने भारत में पूँजीपतियों को अपनी संपत्ति को व्यक्तिगत नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज की धरोहर समझने को कहा। इस हेतु पूँजीपतियों से हृदय परिवर्तन की मांग की।
4. इस सिद्धांत के अनुसार 'ईश्वर संपत्ति का मालिक है।'
5. व्यक्ति सम्पति का ट्रस्टी है।
6. गाँधीजी का प्रसिद्ध कथन है कि प्रकृति के द्वारा सभी की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त साम्रगी उपलब्ध है लेकिन किसी भी एक व्यक्ति के लालच के लिए प्रकृति में सम्पदा का अभाव है।
7. इसलिए गाँधीजी की विचारधारा में दान पर अत्यधिक महत्व दिया गया। दान के कई रूप है। (1) श्रम दान (2) सम्पति दान (3) भूमि दान (4)ग्राम दान
8. गाँधीजी ने कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योग का समर्थन किया, क्योंकि इससे सम्पति का केन्द्रीकरण नहीं होता।
9. गाँधीवादी विचारधारा भारत जैसे श्रम प्रधान देश के लिए अत्यधिक व्यवहारिक है।

10. इसीलिए वे भारी मशीनों के विरोधी थे लेकिन मशीन मात्रा के विरोधी नहीं थे क्योंकि चरखा भी एक मशीन है।
11. गाँधीजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को श्रम दान करना चाहिए।[11]
12. नागरिक अधिकारों का प्रतिरूप–गांधीवादी आदर्श राज्य नागरिक अधिकारों को बिना जाति, धर्म, रंग, भाषा, वर्ण और लिंग के भेदभाव के समान रूप से स्वतंत्रता ओर समानता आधारित सभी सामाजिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त होगें। प्रत्येक नागरिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और इच्छानुसार संगठन निर्मित करने के अधिकार से सम्पन्न होगे।

धर्म निरपेक्ष राज्य

गाँधीवादी राज्य का कोई राजधर्म नहीं होगा। उसका स्वरूप धर्म या पंथ निरपेक्ष होगा तथा उसकी नीति सर्वधर्म सम्भाव पर आधारित होगी। वह न किसी धर्म विशेष और उसके अनुयायियों का धर्म के कारण विशेष साधन–सुविधाएं प्रदान करेगा। इस दृष्टि से वह सभी नागरिकों को समान समझेगा। वह आवश्यक होने पर ही सामाजिक हित में ही व्यक्ति की धार्मिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करेगा अन्यथा हर व्यक्ति को धार्मिक दृष्टि से उपासना आराधना की स्वतंत्रता प्राप्त होगी।

अस्पृश्यता मुक्त

गाँधीजी का आदर्श राज्य अस्पृश्यता के अभिशाप से मुक्त होगा। किसी के साथ किसी के द्वारा अस्पृश्यता या छुआछूत पूर्ण व्यवहार नहीं होगा। अस्पृश्यता एक दण्डनीय अपराध होगी।

निः शुल्क प्राथमिक शिक्षा

आदर्श राज्य में अनिवार्य निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था होगी। अतः इस स्तर पर सभी को शिक्षा प्रदान करना राज्य का एक अनिवार्य उत्तरदायित्व होगा। इसी तरह राज्य व्यक्ति और समाज के हित में महानिषेध और गौ–हत्या निषेध की व्यवस्था को भी लागू रखेगा।[12]

निष्कर्ष

हुमांयू कबीर (हुमायूँ कबीर एक भारतीय शिक्षाविद् थे, वह बंगाली भाषा में कवि, निबंधकार और उपान्यासकार भी थे जो एक प्रसिध्द राजनीतिक विचारक थे) के कथनानुसार गाँधीजी उदार परम्परा व दार्शनिक अराजकता की परम्परा के उत्तराधिकारी, समाजवादी विचार में पाये जाने वाले समता भाव के भी वे उत्तराधिकारी थे, उनका मानना था कि जीवन की अच्छी वस्तुएँ सबको बराबर–बराबर मिलनी चाहिए। यदि गाँधीजी आज जीवित होते तो वे सामाजिक, कल्याणकारी राज्य के आदर्श का समर्थन तो करते पर ऐसे राज्य की व्याख्या उनकी अपनी होती। जन हितैषी होने के कारण, अशिक्षित और पिछड़े वर्ग के प्रति उनकी हार्दिक और गहरी सहानुभूति थी, गाँधी जी जनहितकारी राज्य का समर्थन करते थे। गाँधीजी समाजवादी समाज को और विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप सरकारी कामों का क्षेत्र बढ़ता जाये, सार्वजनिक धन की भारी बर्बादी हो, लोगों को भ्रष्टाचार मिले, शायद गाँधी जी यह कभी पसन्द न करते कि भारी उद्योगों और बहुधन्धी विशाल नदी–घाटी योजनाओं पर इतना अधिक ध्यान दिया जाये क्योंकि इन पर खर्च होने वाले भारी धन के अनुपात में गरीबों को इन योजनाओं से शायद कभी लाभ पहुँच सका है। वे सामुदायिक कल्याणकारी योजनाओं का समर्थन करते और इन्हीं योजनओं को कल्याणकारी राज्य का आधार बनाते।[13]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जोहरी जे० सी०, राजनीति विज्ञान, प्रकाशक– एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन्स, 03/20 B आगरा मथुरा बाईपास रोड़, निकट तुलसी सिनेमा, आगरा– 282002, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या– 96*
2. *Google, गाँधी का आदर्श राज्य, महात्मा गांधी कैसा रामराज्य चाहते – सत्याग्रह।*
3. *Google, गाँधी का आदर्श राज्य, महात्मा गांधी कैसा रामराज्य चाहते – सत्याग्रह।*
4. *Google, गाँधी का आदर्श राज्य, महात्मा गांधी कैसा रामराज्य चाहते – सत्याग्रह।*
5. *अरोड़ा एन०डी०, राजनीति विज्ञान, प्रकाशक Tata Mcgraw Hill Education Private Limited New Delhi Copy right, पृष्ठ संख्या– 15.21*
6. *अरोड़ा एन०डी०, राजनीति विज्ञान, प्रकाशक Tata Mcgraw Hill Education Private Limited New Delhi Copy right, पृष्ठ संख्या– 15.21*
7. *गाबा ओम प्रकाश राजनीति–चिंतन की रूप रेखा, प्रकाशक–मयूर पेपर बैक्स ए–95, सेक्टर–5, नोएडा–201301, पाँचवाँ पुर्नमुद्रण संस्करण : 2014, पृष्ठ संख्या– 328*
8. *गाबा ओम प्रकाश राजनीति–चिंतन की रूप रेखा, प्रकाशक–मयूर पेपर बैक्स ए–95, सेक्टर–5, नोएडा–201301, पाँचवाँ पुर्नमुद्रण संस्करण : 2014, पृष्ठ संख्या– 329*
9. *जोहरी जे० सी०, राजनीति विज्ञान, प्रकाशक–एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन्स, 03/20 ठ आगरा मथुरा बाईपास रोड़, निकट तुलसी सिनेमा, आगरा– 282002, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या– 97*
10. *जोहरी जे० सी०, राजनीति विज्ञान, प्रकाशक–एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन्स, 03/20 ठ आगरा मथुरा बाईपास रोड़, निकट तुलसी सिनेमा, आगरा– 282002, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या– 97*
11. *मिश्रा राजेश, राजनीति विज्ञान एक समग्र अध्ययन, प्रकाशक–ओरियंट ब्लैक स्वॉन प्राइवेट लिमिटेड 3–6–752 हिमायतरनगर, हैदराबाद 500029, तेलंगाना, भारत, सातवां संस्करण– 2020 पृष्ठ संख्या–153,154*
12. *जोहरी जे० सी०, राजनीति विज्ञान, प्रकाशक–एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन्स, 03/20 ठ आगरा मथुरा बाईपास रोड़, निकट तुलसी सिनेमा, आगरा– 282002, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या– 98*
13. *आशीर्वाथम एडी, राजनीति विज्ञान, प्रकाशक– एस० चन्द्र एण्ड कम्पनी (प्रा०) लिमिटेड (An ISO 9001 : 2008 कम्पनी) रामनगर, नई दिल्ली 110055, संस्करण– 2014, पृष्ठ संख्या–578।*